

प्रारंभिक परीक्षा

बुद्ध के अवशेष

संदर्भ

- गौतम बुद्ध के पवित्र अवशेषों की हालिया प्रदर्शनी बुद्ध पूर्णिमा के दौरान लद्दाख में आयोजित की गई।

बुद्ध के अवशेषों के बारे में

- अवशेषों की प्रकृति और प्रकार: बुद्ध अवशेष बुद्ध से जुड़े पवित्र अवशेष या संबंधित वस्तुएं हैं, जिन्हें इस प्रकार वर्गीकृत किया गया है:
 - **शारीरिक:** शारीरिक अवशेष (हड्डियाँ, राख)
 - **पारिभोगिक:** बुद्ध द्वारा उपयोग की गई वस्तुएँ (चीवर/वस्त्र, पात्र)
 - **उद्देशिका:** प्रतीकात्मक प्रतिनिधित्व (स्तूप, चित्र)

भगवान बुद्ध के अवशेषों का इतिहास

- 80 वर्ष की आयु में, बुद्ध ने उत्तर प्रदेश के कुशीनगर में मुक्ति (महापरिनिर्वाण) प्राप्त की।
- कुशीनगर के मल्ल वंश ने एक चक्रवर्ती राजा के लिए आरक्षित समारोहों के साथ उनका अंतिम संस्कार किया।
- पवित्र अवशेषों को आठ हिस्सों में विभाजित किया गया था: मगध के अजातशत्रु, वैशाली के लिच्छवी, कपिलवस्तु के शाक्य, कुशीनगर के मल्ल, अल्लकप्प के बुली, पावा के मल्ल, रामग्राम के कोलिय और वेथदीप के एक ब्राह्मण के लिए।
- इन आठ हिस्सों पर स्तूप बनाए गए थे, साथ ही कलश (urn) और अंगारों (embers) पर दो अतिरिक्त स्तूप बनाए गए थे।
- **शारीरिक स्तूप:** शारीरिक अवशेषों पर निर्मित ये संरचनाएं सबसे पुराने जीवित बौद्ध तीर्थस्थलों का प्रतिनिधित्व करती हैं।
- सम्राट अशोक ने बौद्ध धर्म को लोकप्रिय बनाने के लिए अपने साम्राज्य में अवशेषों को 84,000 स्तूपों में पुनर्वितरित करने हेतु मूल आठ स्तूपों में से सात को खोला था।
- **प्रमुख स्थल:** महत्वपूर्ण अवशेष पिपरहवा (भारत), श्रीलंका, म्यांमार और अन्य बौद्ध देशों जैसे स्थानों में पाए जाते हैं।
- **महत्व:**
 - **आध्यात्मिक महत्व:** इन्हें बुद्ध की उपस्थिति का पवित्र अवतार माना जाता है, जो भक्ति को प्रेरित करते हैं।
 - **राजनयिक भूमिका:** थाईलैंड, वियतनाम और मंगोलिया जैसे देशों में अवशेषों की प्रदर्शनियां सांस्कृतिक कूटनीति को मजबूत करती हैं।
 - **लद्दाख की भूमिका:** लद्दाख ने ऐतिहासिक रूप से सिल्क रूट के माध्यम से बौद्ध धर्म के प्रसार के लिए एक प्रवेश द्वार के रूप में कार्य किया, जिससे यह बौद्ध परंपराओं को संरक्षित करने का एक प्रमुख केंद्र बन गया।

पिपरहवा अवशेषों के बारे में

- विलियम क्लैक्सटन पेपे द्वारा 1898 में पिपरावा (उत्तर प्रदेश) में खोजा गया
- इसमें हड्डियों के टुकड़े, ताबूत, आभूषण और शिलालेख शामिल हैं जो इन्हें बुद्ध के शाक्य वंश से जोड़ते हैं

- बुद्ध के सबसे प्राचीन और प्रामाणिक अवशेषों में से एक माना जाता है
- स्वदेश वापसी
 - औपनिवेशिक काल के दौरान विदेश ले जाए गए अवशेषों को 127 वर्षों के बाद भारत वापस लाया गया
 - हांगकांग में नीलामी रोकने और उनकी वापसी सुनिश्चित करने के लिए सरकार ने हस्तक्षेप किया (2025)

कोमागाटा मारू घटना (1914)

संदर्भ

कोमागाटा मारू घटना ने औपनिवेशिक भेदभाव की ओर पुनः ध्यान आकर्षित किया है।

घटना के बारे में

- **यात्रा (1914):** गुरदित सिंह ने कनाडा के भेदभावपूर्ण "निरंतर यात्रा विनियमन" को चुनौती देने के लिए 376 भारतीय यात्रियों को वैकूवर ले जाने के लिए जापानी स्टीमशिप कोमागाटा मारू को किराए पर लिया।
- **वैकूवर गतिरोध:** आगमन पर, जहाज को प्रवेश से मना कर दिया गया; यात्री दो महीने तक भोजन और पानी की कमी के साथ फंसे रहे, जबकि "शोर कमेटी" ने उतरने के उनके अधिकार के लिए एक असफल कानूनी लड़ाई लड़ी।
- **जबरन रवानगी:** स्थानीय अधिकारियों के साथ तनावपूर्ण गतिरोध और झड़पों के बाद, जहाज को जुलाई 1914 में कनाडाई जल क्षेत्र से जबरन निकाल दिया गया और ब्रिटिश दबाव में कई एशियाई बंदरगाहों पर रुकने की अनुमति नहीं दी गई।
- **बज बज नरसंहार:** जब जहाज सितंबर 1914 में कलकत्ता पहुंचा, तो ब्रिटिश अधिकारियों ने यात्रियों को गिरफ्तार करने का प्रयास किया, जिससे दंगा भड़क गया और पुलिस की गोलीबारी हुई जिसमें लगभग 20 लोग मारे गए।
- **महत्व**
 - **औपनिवेशिक नस्लवाद का खुलासा:** इसने "समान नागरिक" के दावों के बावजूद ब्रिटिश साम्राज्य के भीतर असमानता को दर्शाया।
 - **स्वतंत्रता संग्राम को बढ़ावा:** इसने गदर जैसे क्रांतिकारी आंदोलनों को मजबूत किया।

दिल्ली में गड्डों की समस्या के समाधान के लिए प्रौद्योगिकियाँ

संदर्भ

नगर निगम दिल्ली (MCD) बार-बार होने वाले गड्डों से निपटने के लिए CSIR-केंद्रीय सड़क अनुसंधान संस्थान द्वारा विकसित नई प्रौद्योगिकियों को अपना रहा है।

इकोफिक्स (स्टील स्लैग-आधारित मिश्रण)

- **त्वरित और सर्व-मौसम मरम्मत:** उपयोग के लिए तैयार सामग्री जिसे बिना सुखाए या टैक कोट के गीले गड्डों में भी लगाया जा सकता है, जिससे सड़कें कुछ ही मिनटों में फिर से खुल जाती हैं।
- **सतत सामग्री:** प्रसंस्कृत स्टील स्लैग का उपयोग करता है, जिससे प्राकृतिक समुच्चय (aggregates) पर निर्भरता कम होती है और अपशिष्ट पुनर्चक्रण को बढ़ावा मिलता है।

रिजुपेव रिजुवेनेटर(Rejupave Rejuvenator)

- **उन्नत पुनर्चक्रण:** पुरानी सड़क सामग्री (RAP) के पुनः उपयोग को ~25% से बढ़ाकर 60-70% तक करता है, जिससे नई इनपुट की आवश्यकता कम हो जाती है।
- **लागत दक्षता:** बिटुमेन पर निर्भरता कम करता है, जिससे सड़कों का पुनरुद्धार (resurfacing) सस्ता और अधिक टिकाऊ हो जाता है।

MSS+ (संशोधित मिक्स सील सरफेसिंग)

- **कम तापमान वाली तकनीक:** कोल्ड-मिक्स विधि जिसमें कम तापमान की आवश्यकता होती है, जिससे ऊर्जा का उपयोग कम होता है।
- **पर्यावरण के अनुकूल और कुशल:** ग्रीनहाउस उत्सर्जन में कटौती करता है और सड़क निर्माण में तेजी लाता है, जो शहरी क्षेत्रों के लिए उपयुक्त है।

सांता मार्टा TAFF सम्मेलन

संदर्भ

जीवाश्म ईंधन से दूर संक्रमण (TAFF) पर पहला वैश्विक सम्मेलन, जिसकी सह-मेजबानी कोलंबिया और नीदरलैंड ने की थी, सांता मार्टा, कोलंबिया में आयोजित किया गया।

सांता मार्टा TAFF सम्मेलन के मुख्य निष्कर्ष

- **संस्थागत निरंतरता:** राष्ट्रों ने 2027 में दूसरे सम्मेलन के लिए प्रतिबद्धता जताई, जिसकी सह-मेजबानी आयरलैंड और तुवालु द्वारा की जाएगी।
- **नया समन्वय ढांचा:** एक नया ढांचा विविध संक्रमण हितधारकों को संरेखित करेगा और प्रयासों को सीधे COP30 प्रक्रियाओं से जोड़ेगा।
- **कार्यप्रवाह (Workstreams) का शुभारंभ:** संक्रमण रोडमैप, उत्पादक-उपभोक्ता समन्वय और वित्त सुधारों पर ध्यान केंद्रित करने के लिए तीन विशिष्ट ट्रैक स्थापित किए गए।
- **जलवायु एकीकरण:** परिणामों को COP30 प्रेसीडेंसी रोडमैप और पेरिस समझौते के दूसरे वैश्विक स्टॉकटेक (Global Stocktake) में एकीकृत किया जाएगा।
- **विज्ञान पैनल:** वैश्विक ऊर्जा संक्रमण के लिए एक नया विज्ञान पैनल लॉन्च किया गया ताकि 1.5°C लक्ष्य के लिए साक्ष्य-आधारित मार्ग प्रदान किए जा सकें।

TAFF (जीवाश्म ईंधन से दूर संक्रमण)

- **परिभाषा:** इस शब्द को COP28 (पहला वैश्विक स्टॉकटेक) के दौरान औपचारिक अंतर्राष्ट्रीय मान्यता मिली, जहाँ देश सामूहिक रूप से "ऊर्जा प्रणालियों में जीवाश्म ईंधन से दूर जाने" के उद्देश्य पर सहमत हुए।
- **TAFF रोडमैप:** देशों के लिए इस लक्ष्य को ठोस, विभेदित कार्यान्वयन विकल्पों में बदलने हेतु ब्राजील (COP30 प्रेसीडेंसी के रूप में) द्वारा एक विशिष्ट "TAFF रोडमैप" प्रस्तावित किया गया था।

- **TAFF एक्टिवेशन ग्रुप:** COP एक्शन एजेंडा के भीतर एक समन्वय समूह, जिसे अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को आकार देने और देशों को राष्ट्रीय रोडमैप विकसित करने में मदद करने का कार्य सौंपा गया है।

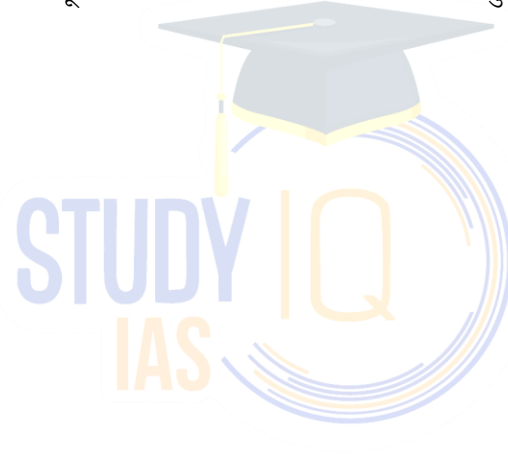
आईएनएस महेंद्रगिरि

संदर्भ

भारतीय नौसेना ने आईएनएस महेंद्रगिरि को शामिल किया है।

आईएनएस महेंद्रगिरि के बारे में

- **श्रेणी और परियोजना:** नीलगिरी-श्रेणी (परियोजना 17A) से संबंधित—अगली पीढ़ी के स्टील्थ गाइडेड-मिसाइल फ्रिगेट।
- **निर्माता:** मझगांव डॉक शिपबिल्डर्स लिमिटेड (मुंबई) द्वारा निर्मित; युद्धपोत डिजाइन ब्यूरो द्वारा डिजाइन किया गया।
- **युद्ध क्षमताएं:** सतह-विरोधी, वायु-विरोधी और पनडुब्बी-रोधी युद्ध (तिहरी भूमिका क्षमता) के लिए सुसज्जित।
- **स्वदेशीकरण:** लगभग 75% स्वदेशी सामग्री, जिसमें 200 से अधिक MSMEs शामिल हैं।
- **रणनीतिक भूमिका:** भारत की ब्लू-वॉटर नेवी क्षमता और हिंद-प्रशांत क्षेत्र में समुद्री सुरक्षा को बढ़ाता है।



मुख्य परीक्षा

भारतीय रिज़र्व बैंक के अपेक्षित ऋण हानि (ECL) मानदंड

संदर्भ

भारतीय रिज़र्व बैंक के नए ECL ढांचे से बैंकों के कॉमन इक्विटी टियर-1(CET-1) अनुपात पर 120 आधार अंकों तक का शुद्ध पूंजीगत प्रभाव पड़ने का अनुमान है।

प्रावधान(Provisioning) पद्धति में बदलाव

- **अंतर्निहित हानि बनाम अपेक्षित क्रेडिट लिमिट (ECL):** बैंक वर्तमान में "अंतर्निहित हानि" मॉडल का उपयोग करते हैं, जिसमें ऋण के खराब होने के बाद ही प्रावधानों को मान्यता दी जाती है; जबकि अपेक्षित क्रेडिट लिमिट (ECL) मॉडल "भविष्य-उन्मुख" है, जिसमें अपेक्षित भविष्य के क्रेडिट जोखिम के आधार पर प्रावधानों की आवश्यकता होती है।
- **मूल्यांकन कारक:** बैंकों को अब डिफॉल्ट की संभावना, डिफॉल्ट होने पर संभावित हानि और डिफॉल्ट के समय जोखिम का आकलन करना होगा।
- **वैश्विक मानक:** 1 अप्रैल, 2027 से प्रभावी ये मानक, बैंकिंग लचीलेपन को बढ़ाने के लिए भारत को IFRS 9 जैसी वैश्विक प्रथाओं के अनुरूप बनाते हैं।

तीन-चरणीय परिसंपत्ति वर्गीकरण

ऋणों को क्रेडिट जोखिम स्तरों के आधार पर वर्गीकृत किया जाएगा ताकि प्रावधान की गहराई निर्धारित की जा सके:

- **चरण I:** ऐसी संपत्तियां जिनमें जोखिम में कम या कोई महत्वपूर्ण वृद्धि नहीं हुई है; प्रावधान 12 महीने के अपेक्षित नुकसान पर आधारित हैं।
- **चरण II:** ऐसी संपत्तियां जिनमें जोखिम में काफी वृद्धि हुई है लेकिन अभी तक निष्पादित परिसंपत्तियां (एनपीए) नहीं हैं; प्रावधान जीवन भर के अपेक्षित नुकसान पर आधारित हैं।
- **चरण III:** क्रेडिट-खराब संपत्तियां या निष्पादित परिसंपत्तियां; इनमें भी जीवन भर के अपेक्षित नुकसान की मान्यता आवश्यक है।

संशोधित एनपीए वर्गीकरण नियम

- **उधारकर्ता-स्तरीय वर्गीकरण:** यदि किसी उधारकर्ता का एक ऋण खराब हो जाता है, तो उसी बैंक में उस उधारकर्ता के सभी ऋणों को निष्पादित परिसंपत्ति (एनपीए) माना जाता है।
- **अपग्रेड प्रतिबंध:** एक बार एनपीए के रूप में वर्गीकृत होने के बाद, उधारकर्ता को मानक परिसंपत्ति स्थिति में वापस अपग्रेड होने से पहले सभी देनदारियों का भुगतान करना होगा।
- **90-दिन की सीमा:** एनपीए वर्गीकरण की अवधि 90 दिन की बकाया अवधि बनी रहती है, लेकिन उधारकर्ता-स्तरीय नियम सख्त ऋण अनुशासन सुनिश्चित करता है।

पूंजी और ऋण प्रभाव

- **CET-1 का प्रभाव:** इस बदलाव का कुल प्रभाव 170 आधार अंकों का हो सकता है, हालांकि मौजूदा सुरक्षा उपायों से शुद्ध प्रभाव घटकर 120 आधार अंकों तक रह जाता है।

- मार्च 2026 तक भारतीय बैंक वर्तमान में पर्याप्त पूंजीकृत हैं और उनका CET-1 अनुपात 14% है, जिससे प्रभाव को अवशोषित किया जा सकता है।
- आरबीआई बैंकों को पूंजी के प्रभाव को चार वित्तीय वर्षों में बांटने की अनुमति देगा।
- **लागत में वृद्धि:** ये नियम ऑफ-बैलेंस-शीट एक्सपोजर और अवितरित ऋण सीमाओं को कवर करते हैं, जिससे माइक्रोफाइनेंस और असुरक्षित खुदरा ऋण जैसे जोखिम भरे क्षेत्रों के लिए लागत बढ़ने की संभावना है।

कॉमन इक्विटी टियर-1 (CET-1) अनुपात

- **परिभाषा:** CET-1 बैंक द्वारा रखी गई नियामक पूंजी की उच्चतम गुणवत्ता है, जिसमें मुख्य रूप से सामान्य स्टॉक और प्रतिधारित आय (retained earnings) शामिल होती है।
- **उद्देश्य:** यह तनाव की अवधि के दौरान एक वित्तीय सुरक्षा कवच (financial cushion) के रूप में कार्य करता है, जो बैंक को परिचालन जारी रखने की अनुमति देते हुए हानि को सोखने के लिए बफ़र प्रदान करता है।
- **नियामक महत्व:** यह बैंक की वित्तीय शक्ति और शोधनक्षमता (solvency) का एक प्रमुख माप है; इस अनुपात में गिरावट इंगित करती है कि बैंक के पास ऋण देने या अप्रत्याशित झटकों को सोखने के लिए कम पूंजी उपलब्ध हो सकती है।

वित्तीय स्थिरता के लिए महत्व

- **शीघ्र पहचान:** यह ढांचा वित्तीय तनाव की जल्द पहचान करता है, जिससे संभावित जोखिमों की कम रिपोर्टिंग (under-reporting) कम हो जाती है।
- **बफ़र्स को सुदृढ़ करना:** 1% से कम के वर्तमान शुद्ध एनपीए अनुपात के साथ, बैंक उच्च परिसंपत्ति गुणवत्ता की अवधि के दौरान संक्रमण कर रहे हैं, जिससे उन्हें भविष्य के झटकों से पहले मजबूत बफ़र बनाने की अनुमति मिलती है।